Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

चीन में भारतीय बौद्ध धर्म प्रचारक – एक संक्षिप्त अध्ययन

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

चीन में भारतीय बौद्ध धर्म प्रचारक – एक संक्षिप्त अध्ययन

Renu Sharma

Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya

प्राचीन भारत का पाश्चात्य जगत के साथ आरम्भिक सम्बन्ध मुख्यत व्यापार एवं वाणिज्य के माध्यम से विकसित हुआ। इसी माध्यम से भारतीयों ने मध्य एशिया तक के देशों का भ्रमण किया तथा अपनी संस्कृति एवं धर्म से उन्हें अवगत कराया। प्राचीन यूनानी साहित्य में भारत से सम्बन्धित अनेक अस्पष्ट विवरण मिलते हैं। ऐतिहासिक तथ्य दर्शाते हैं कि पश्चिमी जगत के साथ भारत का सीधा सम्पर्क सम्भवतः सिकन्दर के आक्रमण से ही सम्भव हुआ जो कालान्तर में और भी दृढ़ होता चला गया। प्राचीन यूनानी साहित्य में ईसा की आरम्भिक शताब्दियों के भारत सम्बन्धी विवरण बहुतायत में प्राप्त होते हैं।

चीनी विवरणों में भारत का सर्वप्रथम उल्लेख कब हुआ? इस पर विवाद है। ऐतिहासिक साक्ष्य दर्शातें हैं कि चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से पहले चीन पर बाह्य विचारों का कोई प्रभाव नहीं था। किन्तु कालान्तर में चीन बाह्य विश्व से प्रभावित होने लगा। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के चीनी साहित्य में भारत के भौगोलिक एवं देवशास्त्र विषयक विवरण अंकित हैं। आर्थर वेली 'दी वे एण्ड इट्स पावर' में लिखते हैं कि ''चीनी लेखक लिएह–त्जू द्वारा वर्णित 'सेंग सिऐन' अथवा पर्वतों में निवास करने वाले पवित्र व्यक्ति भारतीय ऋषि ही थे और 'चुआंग–त्जू' में वर्णित ताओवादियों की शारीरिक क्रियाएं हिन्दू योगासनों के समान थी।'' कुछ भी हो इस बात की सम्भावना तो हो सकती है कि भारतीय ऋषियों की कुछ यौगिक क्रियाएं चीन पहुँच गईं हों। इसके अतिरिक्त चीनी शांतवादी एक प्रकार की सम्मोहनजनित योगनिद्रा का अभ्यास करते थे जो भारतीय योग के समान थी। पी.सी. बागची के अनुसार ताओवादी चीनी दार्शनिक ''ल्यू–एन'' ने अपने ग्रंथ में ब्रह्माण्ड विज्ञान का उपयोग किया था जो कि स्पष्टतः बौद्ध प्रभाव लिए है। ल्यू–एन की मृत्यु 122 ई.पू. में हुई थी। किन्तु ये सभी तथ्य प्रामाणिक नहीं हैं। द्वितीय शती के चीनी लेखक शुमाशीन ने प्रत्यक्ष रूप से भारत सम्बन्धी विवरण लिखा जो कि अल्प हैं। चीनी साहित्य में भारत का स्पष्ट उल्लेख 138 ई.पूर्व में मिलता है, जब एक मेधावी और साहसी चीनी दूत 'चाँग चिएन' दूत–मण्डल के साथ बैक्ट्रिया गया। वहाँ उसे हूणों ने कैद कर लिया तथा दस वर्ष तक बन्दी बनाए रखा। कैद से छूटकर जब वह चीन पहुँचा तो चीनी सम्राट को दिए अपने वृतान्त में उसने 'यूह–ची' प्रदेश के दक्षिण पूर्व में स्थित 'शेन–तू' प्रदेश यानि भारत का उल्लेख किया। चांग चिएन ने बैक्ट्रिया में चीन के दक्षिण प्रान्त 'जे–च्वान' से आए हुए बांस के खम्बों तथा वस्त्रों का उल्लेख किया, जो वहाँ अफगानिस्तान होते हुए भारत से पहुँचे थे। उसके इस वृतान्त से प्रभावित होकर चीनी हॉन सम्राट के मन में भारत के साथ व्यापार एवं सम्पर्क स्थापित करने की अभिलाषा जागृत हुई। फलतः व्यापार को बढ़ावा मिला तथा भारतीय यात्री चीन की यात्रा पर जाने लगे। चीन के साथ व्यापारिक सम्बन्ध का साक्ष्य मैसूर से प्राप्त 138 ई.पू. की एक चीनी मुद्रा से भी होता है। चीन से व्यापार स्थल एवं जल दोनों मार्गों से होता था। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि चीन से भारत का आरम्भिक सम्पर्क व्यापार के माध्यम से ही स्थापित हुआ। व्यापारिक उद्देश्य से चीन जाने वाले भारतीय व्यापारियों ने वहाँ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचार किया। इसी माध्यम से बौद्ध धर्म चीन पहुँचा तथा भारत एवं चीन के बीच सम्पर्क का एक और कारण बना। चीनी लोगों एवं शासकों ने बौद्ध धर्म में रूचि ली और इसे ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया। धर्म प्रचार के उद्देश्य से अनेक बौद्ध प्रचारक चीन पहुँचे। इन प्रचारकों में कुमारजीव, परमार्थ एवं बौधिधर्म प्रमुख थे। चीनी साक्ष्यों के अनुसार चीन में बौधिधर्म का इतना प्रभाव था कि उसे देवता माना जाने लगा था। इसी प्रकार कुमारजीव का स्वागत भी चीन में राजगुरू की भांति हुआ था। वह एक सुन्दर महाविहार में रहता था। उसके प्रयासों से चीन में बड़ी संख्या में बौद्ध विहार बने तथा बहुत से लोग बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए। चीन में बौद्ध धर्म के पदार्पण की वास्तविक तिथि के विषय में भी अनेक मत हैं। एक चीनी परम्परा के अनुसार मौर्यकालीन भारत से कुछ बौद्ध प्रचारक चीन गए थे। यद्यपि इसकी एतिहासिकता संदिग्ध है तथापि छठी शताब्दी में लिखी गई एक चीनी पुस्तक ''ली–ताई–सान–पाओ–ची'' यानि 'चीनी राजवंशों का विवरण' के अनुसार तीसरी शताब्दी ई. पू. के प्रारम्भ में श्रमण 'शिह–ली–फाँग' नामक एक भारतीय भिक्षु की अध्यक्षता में 18 बौद्ध भिक्षु चीनी दरबार में आए थे। ऐसा माना जाता है कि इस प्रचारक मण्डल को चीन में अशोक ने भेजा था। अतः सम्भव है कि तीसरी शताब्दी ई.पू. में बौद्ध धर्म चीन पहुँच चुका था, परन्तु अधिकारिक सूत्रों के अनुसार चीन जाने वाले प्रथम भारतीय बौद्ध प्रचारक धर्मरत्न एवं कश्यप मातंग थे, जो 67 ई. में चीन गए थे। हॉन सम्राट ने उनके लिए एक विहार बनवाया था। इसके पश्चात् तो भारतीय बौद्ध भिक्षुओं का चीन जाना प्रारम्भ हो गया। कालान्तर में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चीन जाने वाले बौद्ध प्रचारकों में धर्मरक्ष, बुद्धभद्र, गुणभद्र प्रभाकरमित्र, बौधिरूचि, वज्रबोधि व अमोघवज्र के नाम उल्लेखनीय हैं। इन विद्वानों ने प्रचार के साथ–साथ बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद भी किया।

चीन जाने वाले बौद्ध धर्म प्रचारक

कुमारजीव :

कुमारजीव चीन जाने वाले भारतीय विद्वानों में सबसे प्रसिद्ध हैं। कुमारजीव के पूर्वज भारत में किसी राज्य के मंत्री रहे थे। उसके पिता कुमारायन मध्य एशिया के कराशर नगर पहुंचे और वहाँ के शासक के सर्वोच्च धार्मिक सलाहकार बने। उनका विवाह राजा की छोटी बहन जीवा से हुआ। कुमारजीव कूची नामक स्थान पर पैदा हुए। कुमारजीव सात वर्ष की अवस्था में बौद्ध भिक्षु बन गए और अपनी माता के साथ रहने लगे जो पहले ही एक बौद्ध मन्दिर में भिक्षुणी थी। दो वर्ष पश्चात् जब कुमारजीव की आयु 9 वर्ष की थी तो उसकी माता उसे कश्मीर

ले गई जहाँ वे प्रसिद्ध विद्वान बंधुदत्त के शिष्य बने, यहाँ उन्होंने बौद्ध साहित्य और दर्शन का अध्ययन किया। अपनी शिक्षा की समाप्ति के पश्चात् उसने अपनी माता के साथ मध्य एशिया के अनेक प्रसिद्ध बौद्ध स्थानों का भ्रमण किया। शीघ्र ही इनकी प्रसिद्धि दूर–दूर तक फैल गई। इन्होंने महायान सम्प्रदाय स्वीकार किया तथा अपने शिक्षक बंधुदत्त को भी महायान में दीक्षित किया। 383 ई. में त्सीन साम्राज्य के सेनापति लू–क्वान ने कराशर नगर को नष्ट कर दिया तथा वहाँ के शासक को मार डाला गया। कुमारजीव को पकड़ लिया गया। 401 ई. तक वह लू–क्वान के साथ लियांग–च्यू में रहा। चीन के शासक याओ–चांग के निमन्त्रण पर वह चांगअन पहुंचा। 412 ई. तक वह चांगअन में रहा। चीनी शासक द्वारा उसे राजगुरु की उपाधि प्रदान की गई। चीन में उसे अत्याधिक शक्ति प्राप्त थी। यहाँ उसने अनेक लोगों को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। अपने जीवन काल में उसने लगभग 100 संस्कृत ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया। कुमारजीव ने पूर्व में संस्कृत से चीनी भाषा में अनुवादित अनेक ग्रंथों की अशुद्धियों को भी ठीक किया। इस कार्य में उसके 800 शिष्यों ने उसकी सहायता की।

संघभूति

संघभूति कश्मीर का निवासी था, जो लगभग 385 ई. में उत्तरी चीन के चांगअन नगर पहुँचा। चांगअन का एक प्रसिद्ध चीनी भिक्षु ताओ–एन उसकी विद्वता से बहुत प्रभावित हुआ। संघभूति ने तार्तार गर्वनर के अनुरोध पर अनेक बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

इन ग्रंथों में अभिधर्म – विभाष – शास्त्र, आर्य – वसुमित्र – बौधिसत्व – संगीतीशास्त्र और संघ रक्षा–संचय– बुद्ध चरित–सूत्र प्रमुख हैं।

संघदेव अथवा गौतम संघदेव

संघदेव कश्मीर का एक श्रमण था जो 383 ई. में चांगअन पहुंचा। वह संघभूति का मित्र था। उसने तोखारी विद्वान धर्मनन्दी और संघभूति के साथ मिलकर अनेक बौद्ध ग्रंथों का चीनी में अनुवाद किया। इन ग्रंथों में मध्यमागम–त्रिधर्मक–शास्त्र और अभिधर्म–हृदय– शास्त्र प्रमुख हैं। वह मृत्युपर्यन्त चीन में ठहरा।

पुण्यत्राता और विमलाक्ष

ये दोनों भिक्षु कश्मीर के निवासी थे जो क्रमशः 404 ई. और 406 ई. में चीन पहुँचे। इन दोनों बौद्ध विद्वानों ने बौद्ध ग्रंथों के चीनी अनुवाद में कुमारजीव की सहायता की। ऐसी भी मान्यता है कि विमलाक्ष कराशर में कुमारजीव का शिक्षक था। जब वह चीन पहुँचा तो कुमारजीव का चीन में प्रभाव अपनी चरम सीमा पर था। उसने स्वयं दो ग्रंथों का अनुवाद किया, जिनमें से अब केवल एक ही प्राप्त है। कुमारजीव की मृत्यु के पश्चात् वह दक्षिण चीन चला गया और 77 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

धर्मयश

यह पुण्यत्राता का शिष्य था जो 407 ई. में चीन में विमलाक्ष के पास पहुँचा। इसने दो अथवा तीन ग्रंथों का चीनी में अनुवाद किया।

बुद्धयशस

बुद्धयशस कश्मीर के एक ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुआ था। उसने समस्त हिन्दू, हीनयानी और महायानी ग्रंथों का अध्ययन किया। अन्त में वह बौद्ध भिक्षु बना। मध्य एशिया प्रवास के दौरान काशगर के शासक ने उसे एक धार्मिक महोत्सव पर अपने तीन हजार भिक्षुओं के साथ आमन्त्रित किया। राजा उसकी विद्वता से अत्यन्त प्रभावित हुआ और उसे अपने महल में ठहराया। यहाँ वह कुमारजीव से मिला और दोनों ने कुछ समय तक इक्ट्ठे अध्ययन किया। कुछ विद्वानों के अनुसार कुमारजीव ने उसके अधीन अध्ययन किया। बुद्धयशस काशगर में 10 वर्ष और कूची में एक वर्ष ठहरा। तत्पश्चात् वह कुमारजीव के साथ कार्य करने चीन चला गया। बुद्धयशस ने भी अनेक ग्रंथों का अनुवाद किया इनमें दीर्घगम प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त महायान–आकाशगर्भ–बौधिसत्व– सूत्र प्रमुख हैं। कुमारजीव की मृत्यु के पश्चात् वह कश्मीर वापिस आ गया। वह सिद्धान्तों का कठोरता से पालन करने वाला था जिसने किसी से कभी कोई उपहार ग्रहण नहीं किया, यहाँ तक कि राजा से भी नहीं। चीन में उसके लिए एक संघाराम का निर्माण किया गया जहाँ वह धर्म का प्रचार करता था। कुमारजीव भी कई शंकाओं का समाधान बुद्धयशस की सहायता से करता था।

धर्मक्षेम अथवा धर्मरक्ष

यह भिक्षु मध्य भारत का निवासी था। बाल्यकाल में ही उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। उसने हीनयानी साहित्य का अध्ययन किया किन्तु बाद में वह महायान से प्रभावित हुआ और 12 वर्ष तक महायानी साहित्य का अध्ययन किया। तत्पश्चात् वह कश्मीर गया तथा 421 ई. में मध्य एशिया के रास्ते पश्चिमी चीन पहुंचा। पश्चिमी चीन का हूण शासक उससे अत्यन्त प्रभावित हुआ। उसने धर्मक्षेम से अपने राज्य में धर्म प्रचार और ग्रंथों के अनुवाद की प्रार्थना की। कुछ समय तक चीनी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त उसने अनेक ग्रंथो का अनुवाद किया इनमे महासन्निपाथ–सूत्र, करूणा–पुण्डरीक–सूत्र, बौधिसत्व–चर्या–निर्देश, उपासक–शील–सूत्र, सुवर्ण–प्रभास–सूत्र आदि प्रमुख हैं। उसने अश्वघोष के बुद्ध चरित का भी चीनी भाशा में अनुवाद किया। उसकी प्रसिद्धि दूर–दूर तक फैल गई। तत्पश्चात् उत्तरी चीन के व्ही साम्राज्य के तीसरे शासक ने उसे अपने साम्राज्य में आमन्त्रित किया किन्तु मार्ग में ही राजधानी के निकट लियान शासक ने इस शंका से उसका वध करवा दिया कि वह व्ही शासक के साथ मिलकर लियान शासक के विरूद्ध षडयन्त्र कर रहा है। उसके द्वारा किए गए बारह अनुवाद चीनी साहित्य में उपलब्ध हैं।

बुद्धजीव

बुद्धजीव एक कश्मीरी का भिक्षु था जो 413 ई. में चीन के नानकिंग नगर में आया। यहाँ उसने दो चीनी भिक्षुओं के साथ मिलकर तीन बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया, जिनमें से एक अब अप्राप्य हैं। दो अन्य ग्रंथ हैं, महिशासक–विनय और महिशासक का प्रतिमोक्ष। जब बुद्धजीव नानकिंग आया तब फाह्यान जीवित था। फाह्यान ने उसे भारत से लाए हुए महिशासक–विनय के अनुवाद का कार्यभार सौंपा।

धर्ममित्र

धर्ममित्र कश्मीरी मूल का भिक्षु था। वह अनेक वर्ष कूचा में रहने के पश्चात् 424 ई. में चीन के तुन–हूआँग पहुँचा। वह अल्प आयु में ही बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुआ। उसने

www.ignited.in

अपने माता–पिता की आज्ञा से गृह जीवन त्याग दिया। उसने तुन–हूऑग में एक विशाल संघाराम की स्थापना की। विभिन्न स्थानों पर बौद्ध शिक्षाओं का प्रचार करने के पश्चात् उसने नानकिंग और चिन–चाओ में ध्यान का प्रचार किया। 87 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

गुणवर्मन

गुणवर्मन कश्मीर के राजपरिवार से सम्बन्धित था। उसने सिंहासन की आकांक्षाओं को त्याग कर एक भिक्षु का जीवन अपनाया और बुद्ध धर्म के प्रचार के लिए लंका गया। ऐसी मान्यता है कि उसने जावा की यात्रा भी की और वहाँ प्रथम बार बौद्ध धर्म का प्रचार किया। 431 ई. में वह चीन के नगर नानकिंग पहुँचा। यहाँ वह जेतवन नामक विहार में रहा जिसे उसके रहने के लिए ही निर्मित किया गया था। उसे दस अथवा बारह बौद्ध ग्रंथों के चीनी अनुवाद का श्रेय दिया जाता है। अनेक महीनों तक जेतवन में रहकर उसने सद्धर्म–पूण्डरीक–सूत्र और दशबल–सूत्र का प्रचार किया। 65 वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई।

गुणभद्र

गुणभद्र मध्य भारत का एक बौद्ध श्रमण था जो ब्राह्मण जाति से सम्बन्ध रखता था। उसने हीनयान, महायान और हिन्दू धर्म के सभी सिद्धान्तों का अध्ययन किया था। 435 ई. में वह लंका के रास्ते चीन आया। उसने फाह्यान द्वारा लंका से लाए गए महायान–संयुक्त–आगम की प्रति का अनुवाद किया, इसके अतिरिक्त उसने श्रीमाला–सिंहनाद–सूत्र,रत्नकारंड–व्यूह, गुणकारण्ड –व्यूह, लंकावतार–सूत्र आदि महायान ग्रंथों के अनुवाद के साथ–साथ हीनयानी ग्रंथ मिलिन्द– पन्हो का भी अनुवाद किया। 468 ई. में 75 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। उसने अपने जीवनकाल के 34 वर्षों में 76 बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया जिनमें से अब 28 ग्रंथ ही उपलब्ध हैं।

धर्मकृतयशस और गुणवृद्धि

ये दोनों भिक्षु मध्य भारत के निवासी थे जो क्रमशः 481 ई. और 492 ई. में चीन गए थे। धर्मकृतयशस ने अमितार्थ–सूत्र का अनुवाद किया और गुणवृद्धि ने तीन ग्रंथों का अनुवाद किया जिनमें से अब केवल दो ग्रंथ ही प्राप्त हैं।

बोधिरुचि

बोधिरुचि का वास्तविक नाम धर्मरुचि था। वह त्रिपिटकाचार्य था और मध्य भारतीय ब्राह्मण परिवार के कश्यप गोत्र से सम्बन्धित था। वह पामीर और मध्य एशिया के रेगिस्तानों को पार करके 508 ई. में लो–यांग पहुँचा। यहाँ उसने 53 बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

परमिति तथा मेघशिखा

मध्य भारत के भिक्षु परमिति और उद्यान के एक भिक्षु मेघशिखा, एक चीनी भिक्षु हवी–त्ती के पास चीन पहुँचे और 705 ई. में एक ग्रंथ का चीनी अनुवाद किया।

उपशून्य

उपशून्य उज्जैन का एक राजकुमार था जो भिक्षु बन गया। वह पूर्वी व्ही साम्राज्य की राजधानी पहुँचा। उसने 538 ई. से 541 ई. के मध्य तीन बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया। 545 ई. में वह लियांग साम्राज्य की राजधानी नानकिंग पहुँचा। यहाँ उसने एक अन्य ग्रंथ का अनुवाद किया। 565 ई. में उपशून्य ने सुविक्रान्ति–विक्रमी– परिप्रच्छ नामक संस्कृत ग्रंथ का चीनी में अनुवाद किया जिसकी प्रति उसे खोतान के एक श्रमण से प्राप्त हुई थी, जो 568 ई. में उसे चीन में मिला था।

परमार्थ

परमार्थ छठी शताब्दी के मध्य उज्जैन से चीन गया। ऐसा माना जाता है कि इसे मगध के किसी गुप्त शासक ने चीन के लियांग वंश के प्रथम राजा व्हू–ती के अनुरोध पर चीन भेजा था। वह बहुत से महायान ग्रंथों को संग्रहित करके नानकिंग पहुँचा। यहाँ उसका भव्य स्वागत हुआ। 557 ई. तक उसने इन ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया। तत्पश्चात् शान वंश के अधीन उसने लगभग 40 ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया। 559 ई. में उसकी चीन में मृत्यु हो गई।

बोधिधर्म

बोधिधर्म कांची के किसी पल्लव शासक का पुत्र था जिसने केवल चीन में ही नहीं अपितु जापान में भी ख्याति अर्जित की। वह वू–ती के शासनकाल में चीन पहुँचा जिसने परमार्थ को भी आमन्त्रित किया था। उसका चीन आगमन चीन के धार्मिक इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात माना जाता है। उसने नौ वर्ष तपस्या में लगाए। उसकी धार्मिक शिक्षाओं को चीन में 'चान' व जापान में 'जेन' के नाम से जाना जाता है, जहाँ बाद में उसने इसका प्रचार किया। चीन और जापान में उसके सम्मान में मन्दिर निर्मित करवाए गए। जापान मे उसे 'धर्म' के नाम से जाना जाता है।

धर्मरुचि

धर्मरुचि दक्षिण भारत का एक श्रमण था, जिसने 501 ई. से 507 ई. तक तीन ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया।

रत्नामति

यह मध्य भारत का निवासी था जिसने 508 ई. में तीन बौद्ध ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया।

बोधिरुचि

यह उत्तरी भारत का निवासी था जो 508 ई. में लो–यांग आया। 535 ई. तक उसने लगभग 30 ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

बुद्धशांत

बुद्धशांत भी मध्य भारत का रहने वाला था जिसने 524 ई. से 550 ई. के बीच लगभग 40 ग्रंथों का चीनी अनुवाद प्रस्तुत

किया। उसने लो–यांग के 'श्वेत अश्व विहार' में रहकर कार्य किया।

गौतम प्रज्ञारुचि

यह बनारस के हिन्दू ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुआ था जिसने 516 ई. से 541 ई. के मध्य लगभग 18 बौद्ध ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया।

नरेन्द्रयश

यह उत्तरी भारत का एक श्रमण था जिसने 557 ई. से 568 ई. के मध्य सात ग्रंथों का तथा 582 ई. से 585 ई. के मध्य आठ ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया। उसकी मृत्यु 589 ई. में हुई।

ज्ञानभद्र, यशोगुप्त व जीवयश

इन तीन भिक्षुओं ने 564–572 ई. के मध्य छह ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया।

बुद्धभद्र तथा विमोक्षसेन

इन दोनों बौद्ध भिक्षुओं का सम्बन्ध कपिलवस्तु के शाक्यों से था जो कालान्तर में उत्तर–पश्चिमी भारत में बस गए थे। जब बुद्धभद्र कश्मीर में था तब एक चीनी भिक्षु ने, जो फाह्यान के साथ भारत आया था, कश्मीर के बौद्धों से एक विद्वान भिक्षु भेजने की प्रार्थना की तब बुद्धभद्र बर्मा के रास्ते चीन गया तथा कुमारजीव के पास पहुँचा।

ज्ञानगुप्त

ज्ञानगुप्त, ज्ञानभद्र एवं ज्ञानयशस का शिष्य था जो चीन में उनसे मिला। उसने 561–592 ई. के बीच अनेक ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया। जब चीन में राजनीतिक संकट का दौर था तो उसे चीन छोड़ने को कहा गया। तुर्क शासक की प्रार्थना पर उसने वहाँ शरण ली लेकिन बाद में वह चीन वापिस आया जहाँ 600 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

धर्मप्रज्ञ अथवा धर्मज्ञान

यह वाराणसी वासी उपासक था तथा पूर्वोल्लिखित प्रज्ञारुचि का ज्येष्ठ पुत्र था। उत्तरी 'त्सी' शासन के पतन के बाद उसे उत्तरी चाऊ वंश की ओर से यान–सेन प्रदेश का प्रशासक नियुक्त किया गया। कुछ समय बाद उसे 'सु' साम्राज्य की राजधानी वापिस बुला लिया गया जहाँ उसने अनेक ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया जिनमें अब केवल एक ही ग्रंथ प्राप्य है।

धर्मगुप्त

यह अन्य प्रसिद्ध भिक्षु था जो दक्षिण गुजरात में पैदा हुआ था। उसकी शिक्षा कन्नौज में हुई थी। कुछ समय पंजाब के प्रसिद्ध 'देव–विहार' में रहने के पश्चात् वह चीन गया। दो वर्ष उसने काशगर के राजकीय विहार में व्यतीत किए। इसके पश्चात् वह कूची, कराशर, तुरफान व हामी गया जहाँ प्रत्येक स्थान पर लगभग दो वर्ष ठहरा। यह सभी स्थान बौद्ध केन्द्रों के रूप में प्रसिद्ध थे। तत्पश्चात् 590 ई. में वह चांगअन पहुँचा। अनेक ग्रंथों के अनुवाद के साथ–साथ उसने उन सभी देशों का भौगोलिक विवरण प्रस्तुत किया, जिनकी उसने यात्रा की थी। इसके साथ ही उसने उन देशों की प्रशासन व्यवस्था, सामाजिक और आर्थिक स्थिति, खान–पान, वस्त्र, शिक्षा तथा रीति रिवाजों का भी वर्णन किया। लेकिन उसका यह ग्रंथ अब अनुपलब्ध है। 619 ई. में धर्मगुप्त की मृत्यु हो गई।

प्रभाकरमित्र

यह श्रमण मध्य भारत के क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ था। प्रभाकरमित्र 627 ई. में चीन गया। उसने तीन ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया। 633 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

पुण्योपाय

पुण्योपाय भी मध्य भारत का एक बौद्ध श्रमण था जो 655 ई. में चीन पहुँचा। कहा जाता है कि वह अपने साथ लगभग 1500 विभिन्न महायानी और हीनयानी ग्रन्थ चीन ले गया था। 656 ई. में चीनी सम्राट ने उसे चीन सागर के एक द्वीप पर अद्भुत औषधियों को ढूंढने के लिए भेजा। वह पुनः 663 ई. में चीन वापिस आया जहाँ उसने अठारह ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

व्रजबोधि

व्रजबोधि दक्षिण भारत का निवासी था तथा जाति से ब्राह्मण था। वह 719 ई. में चीन गया। दो वर्षों के अन्तराल में उसने चार बौद्ध ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया। चीन में ही उसकी मृत्यु हुई।

शुभंकरसिंह

यह शाक्यमुनि बुद्ध के निकट सम्बन्धी अमृतोदन के वंश से सम्बन्धित था। वह नालन्दा विहार में रहता था। वह 716 ई. में अनेक संस्कृत ग्रंथों के साथ चीनी नगर चांगअन पहुँचा। उसने 724 ई. तक चार ग्रंथों का चीनी अनुवाद प्रस्तुत किया। 735 ई. में चीन में ही उसकी मृत्यु हो गई।

अमोघव्रज

अमोघव्रज उत्तरी भारत का निवासी था। कतिपय विद्वानों के अनुसार यह लंका निवासी था तथा जाति से ब्राह्मण था। वह अपने बीमार आचार्य को मिलने के लिए चीन आया जिसने उसे भारत और चीन में ग्रंथों के संग्रह का आदेश दिया। अमोघव्रज 741 ई. में चीन से चला और 746 ई. में चीन वापिस पहुँचा। चीनी सम्राट ने उसे अनेक राजकीय पदवियाँ प्रदान की। उसने अनेक ग्रंथों का चीनी अनुवाद प्रस्तुत किया। 70 वर्ष की आयु में 774 ई. में उसकी मृत्यु हुई। चीनी सम्राट ने उसे राजकीय सम्मान प्रदान किया। चीन में 'तन्त्र' के प्रचार में उसकी प्रमुख भूमिका रही।

विनितरुचि

यह दक्षिण भारत के ब्राह्मण कुल से सम्बन्ध रखता था। वह छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में चीन गया जहाँ उसने दो ग्रंथों का चीनी अनुवाद किया। चीन में 'ध्यान' के प्रसार में उसकी प्रमुख भूमिका रही। उपरोक्त भारतीय बौद्ध विद्वानों के अतिरिक्त कई अन्य प्रचारक चीन गए परन्तु उनके विषय में अधिक जानकारी का अभाव है।

संक्षेप में, कहा जा सकता है कि उपरोक्त विद्वानों ने चीनी शासकों एवं जनता के मन में भारत के प्रति जिस श्रद्धा तथा प्रेम के बीज बोए उससे उनकी भारत को निकट से जानने तथा कुछ चीनी भिक्षुओं में भारत भ्रमण की इच्छा बलवती हुई। फलतः उनका भारत आने का क्रम आरम्भ हुआ। जिन चीनी यात्रियों ने भारत यात्रा की उसमें फाह्यान, युऑन च्वांग (ह्वेनसांग), सुगंयुन तथा इत्सिंग प्रमुख है। यद्यपि इससे पूर्व भी भारत आने वाले कुछ चीनी यात्रियों के वृतान्त मिलते हैं। परन्तु यह साक्ष्य प्रबल नहीं हैं। ऐसी कथाएँ चीनी साहित्य में अवश्य प्राप्त होती हैं जिनके अनुसार उत्तरी पंजाब स्थित कुषाण शासक कनिष्क ने कुछ चीनी राजकुमारों को बन्दी बनाया था तथा तीसरी शताब्दी में कुछ चीनी विद्वान भारत आए थे। ऐसा ही एक चीनी यात्री भिक्षु 'चू–शे–लिन' 260 ई. में चीन से भारत यात्रा के लिए चला था, परन्तु खोतान में ही रह गया था। सातवीं शताब्दी में भारत भ्रमण के लिए भारत आए चीनी यात्री इत्सिंग ने उल्लेख किया है कि बर्मा के रास्ते बीस चीनी भिक्षु आज से 500 वर्ष पूर्व भारत आए थे, जिनके लिए श्री गुप्त ने बोध गया के निकट एक (चीनी) संघाराम का निर्माण करवाया था। श्रीगुप्त का शासनकाल 275–300 ई. के मध्य निर्धारित किया जाता है। इससे संकेत मिलता है कि लगभग 275 ई. में ये चीनी यात्री भारत आए थे। किन्तु चौथी शताब्दी से पूर्व इनके प्रमाण संदिग्ध हैं। भारत आने वाले प्रायः सभी यात्रियों का प्रयोजन बौद्ध तीर्थ स्थानों का भ्रमण तथा बौद्धग्रंथों का संग्रह मात्र था, परन्तु इनके वृतान्तों में कहीं–कहीं तत्कालीन भारत के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक पक्ष की जानकारी भी मिलती है। इनमें युआन च्वांग (ह्वेनसांग) द्वारा लिपिबद्ध विवरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं जो सातवीं शती के भारत के इतिहास का प्रमुख स्त्रोत ग्रंथ है।

सन्दर्भ

1. आर्थर वेली, दी वे एण्ड इट्स पावर, पृ. 114

2. पी.सी.बागची, ए कम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, खण्ड दो, पृ. 766

3. दामोदर सिंहल, एशिया में बौद्ध धर्म, पृ 47

4. पी.के. मुखर्जी, इण्डियन लिट्रेचर इन चाईना एण्ड फॉर ईस्ट, पृ. 88

5. सुधासेन गुप्ता, बुद्धिज्म इन क्लासिकल एज, पृ. 53

6. पी.के.मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ. 87; पी.सी.बागची, इण्डिया एण्ड चाईना, पृ. 37

7. नानजिओ, कॉटलाग ऑफ दी चाईनीज बुद्धिस्ट त्रिपिटकाज;नानजिओ कॉटलाग नं. 1160

8. पी.के.मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ. 87

9. नानजिओ, पूर्वोक्त, (कॉट. 545)

10. वही (कॉट. 81)

11. वही (कॉट. 142)

12. वही (कॉट. 158)

13. वही (कॉट. 1089)

14. वही (कॉट. 127)

15. आर.सी.मजूदार, (सम्पा.) दी क्लासिकल एज., पृ. 610

16. पी.के.मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ. 140

17. पी.के.मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ. 184

18. वही, पृ. 184

19. पी.के.मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ. 184

20. पी.के.मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ. 174

21. आर.सी.मजूमदार, (सम्पा.), पूर्वोक्त, पृ. 610

22. पी.के.मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ. 194

23. पी.सी.बागची, पूर्वोक्त, पृ. 228

24. आर.सी.मजूमदार, (सम्पा.), पूर्वोक्त, पृ. 2